मैथिली (प्रतिष्ठा)
बी० ए० (H) पार्ट-II

बसंत कुमार
अतिथि शिक्षक
दिनांक 15-04-20

प्रकरण- वर्णरत्नाकर

1. वर्णरत्नाकर ग्रंथक विषय ओ स्वरूप

वर्णरत्नाकर सर्वथा एक विचित्र प्रकारक ग्रन्थ थिक। एहि ग्रंथक गणना ओहि वर्गक पोथीसँ कमल जाइत अछि जे कोनो वर्ग विशेषमे राखब सम्भव नहि अछि। ई पोथीकेँ ज्योतिरीश्वर कोन प्रयोजन हेतु लिखलनि वा ककरा लेल लिखलनि एहि विषय-वस्तुपर विद्वानक बीच मतान्तर छनि। एहि पोथीक प्रथम अवलोकक म० म० हरप्रसाद शास्त्रीक मत छनि- ई पोथीमे कवि-परिपाटी (Poetic Convetion) प्रतिपादन भेल अछि। अर्थात काव्यमे कोन वस्तुक वर्णन कोना करी तकर मार्गदर्शन कविकेँ करायब एकर उद्देश्य थिक।

वर्णरत्नाकरक प्रथम सम्पादक- सुनीति कुमार चटर्जीक कहब छनि जे

ई लौकिक ओ संस्कृत शब्द समक
एक प्रकारक कोश थिक। काव्यमे
वर्णनीय विविध वस्तु ओ भाव-समक
प्रसिद्ध उपमा ओ वर्णनपरिपाटीक संग्रह
थिक। किन्तु आगाँ जाय सम्पादक महोदय
स्पष्ट कयलनि जे ई ग्रंथ कथक अर्थात्
कथावाचक लोकनिक मार्ग- दर्शनार्थ
लिखल गेल। कथावाचक लोकनिकेँ
मिथिलामे व्यास कहल जाइत छल।
कथावाचक लोकनि कथा-प्रसंगे नगर,
वन, आदिक वर्णन करैत छलाह तेँ
ज्योतिरीश्वर हिनका सुविधा वास्ते लिखने
होथिन, मुदा एहि ग्रंथमे देवी-देवता दिश,
कनेको अनुरक्ति नाइ लक्षित होइत अछि
तेँ कहि सकैत छी जे ई कथावाचक
लोकनि हेतु नाइ लिखल गेल छलनि।

शेष अगिला अंकमे